RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 49 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 25 फरवरी, 2018

विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 49, 22-25 फरवरी 2018 तदनुसार 14 फाल्गन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय।
इन्द्रो मायाभि: पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरय: शता दश।।
–ऋ. ६।४७।१८

शब्दार्थ–रूपंरूपम् = प्रत्येक रूप के **प्रतिरूप:** = अनुरूप **बभूव:** = हो रहा है **तत्** = वह **रूपम्** = रूप **अस्य** = इसके **प्रतिचक्षणाय** = प्रत्यक्ष दिखलाने के लिए है। **पुरुरूप:** = बहुरूपिया **इन्द्र:** = इन्द्र **मायाभि:** = मायाओं से, बुद्धियों से **ईयते** = जाना जाता है **हि** = क्योंकि **शता+दश** = हज़ारों **हरय:** = हरि, सामर्थ्य **अस्य** = इसके, इसमें **युक्ता:** = युक्त हैं, लगी हैं।

व्याख्या–अमीबा की सूक्ष्म दशा से लेकर महाबुद्धिसम्पन्न मनुष्य के शरीर तक में आत्मा रहता है। अमीबा के देह में वह जैसी गति, मति और चेष्टा करता है, पिपीलिका के देह में जाकर उसकी स्थिति और भासने लगती है। गज के विशालकाय में जाकर उसकी और ही माया प्रतीत होती है। मनुष्य की शान इन सबसे निराली है। जीव, स्वकर्मानुसार जिस शरीर में जाता है, वैसा ही बन जाता है– **'रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव'** = प्रत्येक रूप में उसी के अनुरूप हो जाता है। शरीरों के ये भिन्न–भिन्न रूप आत्मा के कर्मों का फल होने से आत्मा के कहे जाते हैं। अतएव– **'तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय'** = उसका यह रूप आत्मा का प्रत्यक्ष देखने का यत्न करो। इसीलिए औपनिषद् महर्षि कहते हैं– **'इहैव सन्तोऽथ विद्मस्तद्वयम्'** [बृहदा० ४।४।१४] = इस देह में रहते हुए ही हम उस तत्त्व को जान सकते हैं। भिन्न–भिन्न देशों में रहता हुआ आत्मा कैसे पहचाना जाए? वेद कहता है– **'इन्द्रो मायाभि: पुरुरूप ईयते'** = पुरुरूप=बहुरूपिया इन्द्र= आत्मा मायाओं के द्वारा जाना जाता है। दर्शन, स्पर्शन आदि विविध चेष्टाएँ आत्मसत्ता का परिचय देती हैं। जड़ में स्वत: चेष्टा हो नहीं सकती। विविध शरीरों में यह जो नानाविध चेष्टा हो रही है, यह बताती है कि कोई चेतन है। हर एक चेतनाधिष्ठित की इच्छा, वासना भिन्न–भिन्न होने से यह भी सिद्ध होता है कि सबमें पृथक्–पृथक् चेतन आत्मा है। उपनिषत् में भी कहा है–

प्राणेन रक्षन्नवरं कुलायं बहिष्कुलायादमृतश्चरित्वा।
स ईयतेऽमृतो यत्र कामं हिरण्मय: पुरुष एकहंस:।।
स्वप्नान्त उच्चावचमीयमानो रूपाणि देव: कुरुते बहूनि।
उतेव स्त्रीभि: सह मोदमानो जक्षदुतेवापि भयानि पश्यन्।।
–बृहदा० ४।३।१२, १३

अविनाशी आत्मा शरीर से निकलकर प्राण द्वारा सूक्ष्मशरीर की रक्षा करता हुआ वहाँ जाता है जहाँ इस एकहंस, ज्योतिर्मय, अविनाशी की कामना होती है। स्वप्न–दशा में जैसे ऊँच–नीच दशा को प्राप्त हुआ बहुत–से रूप बनाता है, कहीं स्त्रियों के साथ मौज मनाता है, कहीं खाता है और कहीं भयभीत होता है।

हम भी भयभीत होकर बहुत नहीं बताते। वेद के शब्दों द्वारा इतना कहने में कोई क्षति नहीं कि– **युक्ता ह्यस्य हरय: शता दश** = इसे भगा ले–जाने वाली, बहका ले जाने वाली हजारों शक्तियाँ हैं, अत: सावधान हो जाओ। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभि:।
यं यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।
–ऋ० १०.१२५.५

भावार्थ– परमदयालु पिता वेद द्वारा हम सब को कहते हैं कि हे मेरे प्यारे पुत्रो! मेरे वचनों को सब विद्वानों ने और साधारण बुद्धि वाले मनुष्यों ने बड़े प्रेम से सुना और सेवन किया। मैं ही तेजस्वी क्षत्रिय को, चार वेद का वक्ता ब्रह्मा, ऋषि को और उज्ज्वल बुद्धि वाले सज्जन को बनाता हूँ। आप लोग वेदानुकूल कर्म करने वाले मेरे प्रेमी भक्त बनो, ताकि मैं आप लोगों को भी उत्तम बनाऊँ।

अहं भूमिददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय।
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनुकेतमायन्।।
–ऋ० ४.२६.२

भावार्थ– दयामय परमात्मा का उपदेश है कि बुद्धिमान् आर्य पुरुषो! मैं अपने पुत्र आर्य पुरुषों आप लोगों को पृथिवी देता हूँ, धनादि उत्तम पदार्थों की आपके लिए वर्षा करता हूँ, नदियों का उत्तम जल भी मैं आप लोगों के लिए लाता और बरसाता हूँ, तुम अपनी अयोग्यता से खो देते हो। धार्मिक विद्वान् बनो, क्योंकि सब विद्वान् मेरे ज्ञान और मेरी आज्ञा के अनुसार चल कर ही सुखी होते हैं।

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक्।।
–ऋ० ७.२७.३

भावार्थ– जो यह सब स्थावर जंगम संसार है, इस सबका प्रकाशक और स्वामी परमेश्वर है, वह सब को उनके कर्मानुसार अनेक प्रकार के धनादि सुन्दर पदार्थ प्रदान करता है। सब मनुष्यों को चाहिये कि उस प्रभु की वेदानुकूल स्तुति प्रार्थना उपासनादि करें, इसलिए अनेक सुन्दर पदार्थों की प्राप्ति के लिए भी, हमें जगत्पति की प्रार्थनादि करनी चाहिये।

जल प्रदूषण और निराकरण

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

जल मनुष्य तथा अन्य जीव धारियों एवं पेड़-पौधों की एक आधारभूत आवश्यकता है। मनुष्य बिना भोजन के तो 30 दिन तक भी जीवित रह सकता है। स्वामी दयानन्द ने अपने भाष्य में लिखा है कि सृष्टि में जीवात्मा की उत्पत्ति जल से ही होती है, जल ही जीवन है।

जैसे-जैसे मानव सभ्यता विकसित हुई है वैसे-वैसे प्रकृति द्वारा शुद्ध जल प्रदूषित होता गया है। जल प्रदूषण की परिभाषा-जल में आवश्यकता से अधिक खनिज लवण, कार्बनिक तथा अकार्बनिक पदार्थ तथा औद्योगिक यंत्रों से निकले रसायनिक पदार्थ, अपशिष्ट पदार्थ तथा मृत जन्तु नदियों, झीलों, सागरों तथा अन्य जलीय क्षेत्रों में विसर्जित किये जाने से ये पदार्थ जल के प्राकृतिक व वास्तविक रूप को नष्ट करके उसे प्रदूषित कर देते है। जिसका मनुष्य और अन्य जीवों पर घातक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जल का प्रदूषित होना जल प्रदूषण कहलाता है।

पृथ्वी तल पर लगभग 2/3 भाग जल से ढका हुआ है। जल की उपयोगिता को देखकर मनुष्य ने अपने रहने के लिए सदैव किसी नदी, तालाब अथवा झील का किनारा चुना है। संसार की सभी सभ्यताओं में सबसे प्राचीन सभ्यता नदी घाटी की सभ्यता मानी जाती है।

वेद में भी इसी बात को ध्यान में रखते हुए वर्णन किया है कि मकान के समीप ही जलाशय भी होना चाहिए।

इमा आपः प्रभाराम्य यक्ष्मा यक्ष्मानाशनीः।

गृहा नुप प्र सीदाम्य मृतेन सहाग्निना।। अथर्व. 3.12.9

अर्थ-(इमा) इस (अयक्ष्माः) रोग रहित (यक्ष्मानाशनी) रोग नाशक (अपः) जल को (प्र) अच्छी प्रकार (आभराभिम) मैं लाता हूँ। (अमृतेन) मृत्यु से बचाने वाले अन्न, घृत, दुग्ध आदि सामग्री (अग्निनासह) अग्नि के सहित (गृहान्) घरों में (उप=उपेत्य) आकर (प्र) अच्छे प्रकार (सीदामि) मैं बैठता हूँ।

चेहरे पर कान्ति तथा शरीर की कोमलता में भी जल का भाग होता है। हमारे भोजन के पचाने में भी शरीर को जल सहायता देता है। तरल पदार्थ शरीर में जल्दी पच जाते हैं।

आपो भद्रा घृत मिदाप आसन्नग्नी षोमो बिभ्रत्याम इत् ताः।

तीव्रो रसो मधु पृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसागमत्।। अथर्व. 3.13.5

अर्थ-(आपः) जल (भद्राः) मंगलमय और (आपः) जल (इत्) ही (घृतम्) घृत (आसन्) था। (ताः) वह (इत्) ही (आपः) जल (अग्नीषोमो) मधुरता से भरी (जलधाराओं) का (अरंगमः) परिपूर्ण मिलने वाला (तीव्रः) तीव्र (रसः) रस (मा) मुझको (प्राणेन) प्राण और (वर्चसा सह) कान्ति बल के साथ (आ गमेत) आगे ले चले।

भावार्थ-जल से घृत सारमय पदार्थ उत्पन्न होते हैं। जल अग्नि अर्थात् जठराग्नि, विद्युत, बड़वानल आदि में प्रयुक्त होकर अन्नादि उत्पन्न करे तथा प्राणियों के बल और तेज को बढ़ाता है। जल के यथा योग्य प्रयोग से प्राणी में दर्शन शक्ति और श्रवण शक्ति और घोष धन्यवाद शब्द और 'वाक्' वर्णात्मक शब्द बोलने की शक्ति आती है और तभी वह इष्ट स्वर्णादि धन की प्राप्ति से भूख आदि से मृत्यु दुःख का त्याग करके अमृत अर्थात् आनन्द भोगता है। जल ही जीवन है। इस विचार को ध्यान में रखकर ही वेद का ऋषि जलधाराओं को अपने समीप बुलाता है।

इदं व आपो हृदयमयं वत्स ऋतावरीः।

इहेत्थमेत शक्वरीर्यत्रेदं वेश्यामि वः।। अथर्व. 3.13.7

अर्थ-(आपः) हे प्राप्ति योग्य जल धाराओं (इदम्) यह (वः) तुम्हारा (हृदयम्) स्वीकार करने योग्य कर्म है। (ऋतावरीः) हे सत्यशील जल धाराओं (अयम्) यह (वत्सः) निवास देने वाला आश्रय है। (शक्वरीः) हे शक्ति वालियों। (इत्थम्) इस प्रकार से (इह) यहाँ पर (आ इत्) आओ। (यत्र) यहां (वः) तुम्हारे (इदम्) जल में (वेश्यामि) प्रवेश करूँ।

कृषि की पैदावार जल पर ही निर्भर है।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।

महे रणाय चक्षसे। ऋ. 10.9.1

अर्थ-(हि) यतः (आपः) जल (मयोभुवः) सुख दाता (स्थ) हैं। (ताः) वे (नः) हमें (ऊर्जे) अन्न (दधातन) प्रदान करें। हमारे लिए (रणाय) रमणीय (चक्षसे) ज्ञान का (दधातन) साधन बनें।

तस्मा अरङ् गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।

आपो जनयथा च नः।। ऋ. 10.9.3

अर्थ-(वः) ये जल (यस्य) जिन अन्न की (क्षयाय) प्राप्ति के लिए (जिन्वथ) उपयोगी हैं (तस्मे) उसके प्राप्तार्थ हम (अरम्) पर्याप्त (गमन) प्रयत्न करें। ये (आपः) जल (नः) हमें (जनयथ) वह अन्न प्राप्त करावें।

आप इद्वा उ भेषजी रापो अमीवचातनीः।

आपः सर्वस्य भेषजी स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।। ऋ. 10.137.6

अर्थ-(आप इत् वा उ) जल ही (भेषजी) सकल रोगहर्ता और (अमीव चातनीः) रोगों के कारणों को मिटाने वाले हैं। (आपः सर्वस्य, भेषजीः) जल ही रोगों की औषध है। (ताः ते भेषजं कृण्वन्तु) वे तेरे सभी रोगों को दूर करें।

ता अपः शिवा अपोयक्ष्यं करणीपः।

यथैव तप्तते मयस्तास्त आदत्त भेषजीः।। अथर्व. 19.2.5

अर्थ-हे मनुष्य। (ताः) उन (शिवाः) मंगलकारी (अपः) जलों को (अयक्ष्मं करणीः) निरोगता करने वाले (अपः) जलों को और (ता) उन (भेषजीः) भय जीतने वाले (अपः) जलों को (आ) सब ओर से (दत्त) उस परमेश्वर ने दिया है। (यथा) जिससे (एव) निश्चय करके (ते) तेरे लिए (मयः) सुख (तप्तते) बढ़े। जल की महत्ता बताने वाले कुछ मंत्रों के बाद हम आगे चलते हैं। जल आपूर्ति तथा उपयोग-हमारे देश में सिन्धु, गंगा और ब्रह्मपुत्र तथा इनकी सहायक नदियों ही स्वच्छ जल के बड़े स्त्रोत हैं। ये नदियां हिमालय से निकलती है तथा इनकी सहायक नदियां विन्ध्याचल तथा आबू पर्वत से निकली हैं। प्रायद्वीपीय भारत में भी कई नदियां निकलती हैं जिनमें महानदी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और ताप्ती मुख्य है! हमारे देश में 86 प्रतिशत पानी नदियों, झीलों, सरोवरों और पोखरों का है शेष भूमिगत जल होता है।

जल का उपयोग पीने के साथ-साथ घरेलू कार्यों में भी काफी मात्रा में होता है परन्तु हमारे देश में कुल पानी का लगभग 70 प्रतिशत प्रदूषित है। हमारे देश के लगभग 6 लाख गावों में शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं है। जल प्रदूषण के कारण-

1. जल में मृत जीव, मल-मूत्र, कूड़ा-करकट आदि छोड़े जाने से जल प्रदूषित हो जाता है।

2. नदियों और तालाबों में साबुन से कपड़े धोने और नहाने से भी जल प्रदूषित हो जाता है।

3. शहर का मल-मूत्र नदियों में छोड़ देने तथा कल-कारखानों के गन्दे अपशिष्ट उत्पादन का नदियों में चले जाने से नदियों का पानी प्रदूषित हो जाता है। वर्षा के जल के साथ-साथ फसलों पर डाले गए कीटनाशक पदार्थ तथा मिट्टी में मिले अन्य हानिकारक पदार्थ भी जलाशयों एवं नदियों में पहुंचते हैं जिससे जल प्रदूषित हो जाता है। समुद्री जल प्रदूषण-वर्तमान में सागरों तथा महासागरों का जल भी प्रदूषित हो रहा है। समुद्रों का जल समुद्र तटीय कारखानों द्वारा तथा शहर के कचरे के कारण प्रदूषित हो रहा है। साथ ही कुल खनिज तेल उत्पादन का 60 प्रतिशत भाग समुद्री परिवहन से एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक पहुंचाया जाता है।

जल प्रदूषण का प्रभाव-

1. प्रदूषित जल पीने से विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनमें आँत रोग, पीलिया, हैजा, टाइफाइड और आतिसार मुख्य है।

2. दूषित जल जलीय जीव-धारियों को भी नष्ट कर देता है। जलाशयों की तलहटी में एकत्रित सल्पाइड गैस (H_25) गन्धक के अम्ल में बदल जाती है। इसका जलीय जीव-जन्तुओं और वनस्पति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

3. प्रदूषित जल भूमि की उर्वरता को हानि पहुंचाता है।

4. प्रदूषित जल का सिंचाई में उपयोग होने से कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है।

5. औद्योगिक कारखानों के गन्दे अपशिष्ट पदार्थों के नदियों में जाने से जल में आक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है। इसका जलीय जीव-जन्तुओं और वनस्पति पर बुरा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

वेदों की उत्पत्ति का विषय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों का भाष्य करने से पूर्व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका नामक ग्रन्थ में वेदों के विषयों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है। जिन-जिन विद्याओं का वेदों में वर्णन किया गया है उनके संक्षिप्त बिन्दुओं पर इसमें प्रकाश ड़ाला गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस ग्रन्थ में ईश्वर की प्रार्थना विषय के उपरान्त वेद की उत्पत्ति के विषय में प्रकाश ड़ाला है। प्राय: लोगों के मन में यह शंका उत्पन्न होती है कि वेदों की उत्पत्ति किससे हुई? निराकार ईश्वर से वेदों की उत्पत्ति किस प्रकार संभव है? आदि अनेक शंकाएं लोगों के मन में प्राय: उठा करती हैं। इन शंकाओं का समाधान करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद की उत्पत्ति के विषय में प्रकाश डाला है।

प्रथम ईश्वर को नमस्कार और प्रार्थना करने के पश्चात वेदों की उत्पत्ति का विषय लिखा जाता है, कि वेद किसने उत्पन्न किए हैं।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत: ऋच: सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।
यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतम: स्विदेव स:।।

अर्थात् सत् जिसका कभी नाश नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञानस्वरूप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नहीं होता, आनन्द जो सदा सुखस्वरूप और सबको सुख देने वाला है, इत्यादि लक्षणों से युक्त पुरूष जो सब जगह से परिपूर्ण हो रहा है, जो सब मनुष्यों को उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भी ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। इसीलिए सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों का ग्रहण करें और वेदोक्त रीति से ही चलें। जज्ञिरे और अजायत इन दोनों क्रियाओं के अधिक होने से वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं ऐसा जाना जाता है। वैसे ही तस्मात् इन दोनों पदों के अधिक होने से यह निश्चय जानना चाहिए कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुए हैं किसी मनुष्य से नहीं। वेदों में सब मन्त्र गायत्र्यादि छन्दों से युक्त ही हैं फिर छन्दांसि इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है। शतपथ आदि ब्राह्मण और वेदमन्त्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि यज्ञ शब्द से विष्णु का और विष्णु पद से सर्वव्यापक जो परमेश्वर है उसी का ग्रहण होता है,क्योंकि सब जगत् की उत्पत्ति करनी परमेश्वर में ही घटती है, अन्यत्र नहीं।

अथर्ववेद के मन्त्र का भाषार्थ लिखते हुए महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, उसी से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ये चारों उत्पन्न हुए हैं। इसी प्रकार रूपकालंकार से वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है कि अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोमों के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण की नाईं है। चारों वेद जिससे उत्पन्न हुए हैं सो कौन सा देव है, उसको तुम मुझसे कहो? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि-जो सब जगत् का धारणकर्ता परमेश्वर है उसका नाम सकम्भ है, उसी को तुम वेदों का कर्ता जानो और यह भी जानो कि उसको छोड़ के मनुष्यों को उपासना करने के योग्य दूसरा कोई इष्टदेव नहीं है। क्योंकि ऐसा अभागा कौन मनुष्य है जो वेदों के कर्ता सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को छोड़ के दूसरे को परमेश्वर मान के उपासना करे।

याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयी! जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक् यजु: साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं, जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आके फिर भीतर को जाता है इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं, बीजाङ्कुरवत्। जैसे बीज में अङ्कुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्षरूप होके फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इससे इसको नित्य ही जानना।

इस विषय में कितने ही पुरूष ऐसा प्रश्न करते हैं कि ईश्वर निराकार है, उससे शब्दरूप वेद कैसे उत्पन्न हो सकते हैं?

इसका यह उत्तर है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है, उसमें ऐसी शंका करनी सर्वथा व्यर्थ है, क्योंकि मुख और प्राणादि साधनों के बिना भी परमेश्वर में मुख और प्राणादि के काम करने का अनन्त सामर्थ्य है कि अपने सामर्थ्य से यथावत् कर सकता है। यह दोष तो हम जीव लोगों में आ सकता है कि मुखादि के बिना मुखादि का कार्य नहीं कर सकते हैं, क्योंकि हम लोग अल्प सामर्थ्य वाले हैं।

और इसमें यह दृष्टान्त भी है कि मन में मुखादि अवयव नहीं हैं, तथापि जैसे उसके भीतर प्रश्नोत्तर आदि शब्दों का उच्चारण मानस व्यापार में होता है, वैसे ही परमेश्वर में भी जानना चाहिए। और जो सम्पूर्ण सामर्थ्य वाला है सो किसी कार्य के करने में किसी का सहाय ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वह अपने सामर्थ्य से ही सब कार्यों को कर सकता है। जैसे हम लोग बिना सहाय के कोई काम नहीं कर सकते, वैसा ईश्वर नहीं है। जैसे देखो कि जग जगत् उत्पन्न नहीं हुआ था, उस समय निराकार ईश्वर ने सम्पूर्ण जगत को बनाया, तब वेदों के रचने में क्या शंका रही? जैसे वेदों में अत्यन्त सूक्ष्म विद्या का रचन ईश्वर ने किया है, वैसे ही जगत् में भी नेत्र आदि पदार्थों का अत्यन्त आश्चर्यरूप रचन किया है तो क्या वेदों की रचना निराकार ईश्वर नहीं कर सकता?

प्रश्न- जगत् के रचने में तो ईश्वर के बिना किसी जीव का सामर्थ्य नहीं है, परन्तु जैसे व्याकरणादि शास्त्र रचने में मनुष्यों का सामर्थ्य होता है, वैसे वेदों के रचने में भी जीव का सामर्थ्य हो सकता है?

उत्तर-नहीं, किन्तु जब ईश्वर ने प्रथम वेद रचे हैं, उनको पढ़ने के पश्चात ग्रन्थ रचने का सामर्थ्य किसी मनुष्य को हो सकता है। उसके पढ़ने और ज्ञान से बिना कोई भी मनुष्य विद्वान् नहीं हो सकता। जैसे इस समय में किसी शास्त्र को पढ़ के, किसी का उपदेश सुन के और मनुष्यों के परस्पर व्यवहारों को देख के ही मनुष्यों को ज्ञान होता है, अन्यथा कभी नहीं होता। जैसे किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकान्त में रख के उसको अन्न और जल युक्ति से देवे, उसके साथ भाषणादि व्यवहार लेशमात्र भी कोई मनुष्य न करे कि जब तक उसका मरण न हो, तब तक उसको इसी प्रकार से रखे तो मनुष्यपने का भी ज्ञान नहीं हो सकता। तथा जैसे बड़े वन में मनुष्यों को बिना उपदेश के यथार्थ ज्ञान नहीं होता, किन्तु पशुओं की नाईं उनकी प्रवृत्ति देखने में आती है, वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना भी सब मनुष्यों की प्रवृत्ति हो जाती है, फिर ग्रन्थ रचने के सामर्थ्य की तो कथा क्या ही कहनी है? इससे वेदों को ईश्वर रचित मानने से ही कल्याण है, अन्यथा नहीं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

ऋषि बोधोत्सव मनाया

आर्य गर्ल्ज़ सी. सै. स्कूल, बठिण्डा के प्रांगण में दिनांक 12-02-2018 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस व ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल में हवन यज्ञ करवाया गया। आर्य समाज के दस नियम सुनाने वाली छात्रा अलीशा, आरती, ईशा तथा स्नेहा को इनाम देकर सम्मानित किया गया। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने सभी को स्वामी जी के जन्म-दिवस तथा महाशिवरात्रि की बधाई दी। उन्होंने बच्चों को स्वामी जी के जीवन के बारे में और उनके द्वारा किए गए समाज भलाई के कार्यों के बारे में बताया। उनके द्वारा बनाए गए आर्य समाज के नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने कहा कि वह स्वामी जी के द्वारा दर्शाए गये मार्ग का अनुसरण करें। मैडम कान्ता कटारिया जी ने बच्चों को आर्य समाज की स्थापना तथा स्त्रियों की भलाई के लिए किए गए कार्यों के बारे में बताया। मैडम चन्द्रकान्ता जी ने अपने मधुर स्वर में भजन गाया। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल जी, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी ने सभी बच्चों को स्वामी दयानन्द जी के जन्म दिवस की बधाई दी। स्वामी दयानन्द जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में स्कूल इमारत को बिजली की लड़ियों से सजाया गया। अंत में शान्ति पाठ का उच्चारण किया गया था और बच्चों को प्रसाद बांटा गया।

हम प्रतिकूलता में भी प्रसन्न रहें

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

जब संसार में जो भी कार्य हो रहा होता है तब तो हम अत्यंत प्रसन्न होते हैं। इस अवस्था में किसी प्रकार की निराशा हमारे पास नहीं आती। हम ही नहीं हमारा पूरा का पूरा परिवार भी प्रसन्नता में आकुल डूब जाता है। यहाँ तक कि हमारे मित्र भी हमारी प्रसन्नता में सहभागी बनकर प्रसन्न होते हैं। सब ओर प्रसन्नता दिखाई देती है किन्तु वेद तो इससे आगे भी कुछ उपदेश कर रहा है। वेद का कहना है कि न केवल हम प्रसन्नता के अवसरों पर ही प्रसन्न हों बल्कि हमें अवसाद के अवसर पर भी निराश नहीं होना चाहिए। इस अवसर पर भी हम प्रसन्न रहें। इस बात का उपदेश अथर्ववेद में इस प्रकार किया गया है।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्यान्वि चृता बन्धपाशान्।

यमो मह्यं पुनारित्त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे।। अथर्व. ६.६३.२।। अनुकूल अवस्था में प्रसन्न रहें।

मन्त्र उपदेश कर रहा है कि जब सब कुछ हमारी अनुकूलता के अनुसार चल रहा होता है तो हम अत्यंत प्रसन्न होते हैं। जब सब कुछ वैसा ही चल रहा होता है तो हम अत्यंत प्रसन्न होते है।

यह मानवीय स्वभाव का ही एक भाग है कि वह सदा प्रसन्न रहना चाहता है। इस प्रसन्नता को पाने के लिए उसे उन अवसरों की आवश्यकता होती है जो प्रसन्नता के लिए अनुकूल होती है। जब उसे यह अनुकूल अवस्था मिल जाती है तो उसे अपार हर्ष होता है। उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रहती। उस की इस प्रसन्नता में उस के परिजन, उस के मित्र तथा उसके आस पास रहने वाले लोगों की प्रसन्नता की भी कोई सीमा नहीं रहती। यहाँ तक कि जो लोग उस को कभी प्रसन्न नहीं देखना चाहते अथवा जिन लोगों को इसे प्रसन्न देख कर जलन सी अनुभव होती है, वह लोग भी दिखावे के लिए उसकी प्रसन्नता के सहभागी बनते हैं। इस प्रकार सब ओर से उसे प्रसन्नता ही प्रसन्नता मिल रही होती है।

मन्त्र के उपदेश का आशय है कि अनुकूल अवस्था में तो सब लोग प्रसन्न रहते ही हैं किन्तु उत्तम प्राणी वह होता है जो प्रतिकूल अवस्था के संकटों में घिरे होने पर भी कभी प्रसन्नता का दामन नहीं छोड़ता अर्थात् प्रतिकूल अवस्था में भी प्रसन्न रहता है। इस अवस्था में भी वह सब को मुस्कुराते हुए मिलता है। प्रतिकूल अवस्था में भी कभी निराश न होकर सब को प्रसन्नचित्त ही दिखाई देता है। मानो कभी किसी प्रकार का संकट उस पर आया ही न हो। जब वह प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देता है तो उसके परिजनों को, उसके मित्रों को भी उस पर आये संकट का आभास नहीं हो पाता। अत: उसकी प्रसन्नता के साथ वह सब भी प्रसन्न ही दिखाई देते हैं। उसके अथवा उसके परिजनों के पास तक निराशा नहीं आ पाती।

वेद का यह मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे प्राणी! तेरी यह प्रसन्न मुद्रा तब तक ही बनी रहेगी जब तक तू आई हुई सब विपत्तियों का हर्ष से, प्रसन्नता से स्वागत करते हुए, उन सब का सामना करेगा। यदि इन आई हुई विपत्तियों को देख कर तू घबरा जावेगा, तेरे मन में अवसाद आ जावेगा, तेरे को निराशा का अनुभव होगा तो तेरे चेहरे की मुस्कान भी कहीं भाग जावेगी। तू दु:खों में डूब जावेगा। तुझे दु:खी मन देखकर तेरे परिवार के लोग भी दु:खी होंगे। तुझे तथा तेरे परिवार के दु:खों की अवस्था को देखकर तेरे अन्य परिजन-मित्र समूह भी अपने आप को कष्ट में अनुभव करेंगे। इस प्रकार सब ओर निराशा का साम्राज्य फैल जावेगा, जिस से हम सदा बचना चाहते हैं। इसलिए हमारे लिए आवश्यक हो जाता है कि हम अवसाद के क्षणों का भी प्रसन्नतापूर्वक सामना करे, किसी प्रकार की निराशा न आने दें और इस अवसाद को प्रसन्नता का ही प्रतिबिम्ब मानते हुए इस का भी स्वागत करें तो प्रसन्नता हमारे से दूर कभी न जाना चाहेगी।

प्रभु की दया से यह सब संभव

हम प्रसन्न रहना चाहते हैं किन्तु यह प्रसन्नता पाने के लिए हमें उपाय भी, कार्य भी इस प्रकार के करने होते हैं, जिनसे हमें प्रसन्नता मिल सके। यदि हम बुरे कार्य करेंगे तो उसका प्रतिफल बुराई अर्थात् निराशा, रुदन, अवसाद के रूप में ही मिलेगा। इसलिए हमें सदा उत्तम कर्म करने चाहियें किन्तु यह सब भी परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद के बिना संभव नहीं। इसलिए हम आई हुई विपत्तियों को भी प्रभु की दया का भाग मानकर उसका दिया हुआ आशीर्वाद समझ कर उन्हें हंसते हुए ग्रहण करे। इसके साथ ही हम सदा परम पिता की कृपा को उस प्रभु की दया को पाने के अधिकारी बने। उस के इस आशीर्वाद को पाने के लिए हम अपना आसन उस प्रभु के निकट लगा कर उसकी स्तुति पूर्वक प्रार्थना सदा किया करें। इस श्रेष्ठ अवस्था को पाने के लिए प्रभु का आशीर्वाद आवश्यक है जो कि उसकी स्तुति पूर्वक प्रार्थना और उपासना से ही संभव है। इसलिए हम सदा उस प्रभु से निकटता बनाए रखें।

परमेश्वर के उपहारों को ग्रहण करें

परमपिता परमात्मा सदा अनेक प्रकार के उपहारों को बांटता रहता है किन्तु प्रात: तथा सायंकाल को वह इन उपहारों को अत्यधिक मात्रा में बांटता है। हम यह उपहार अधिक से अधिक मात्रा में पाकर प्रसन्न होना चाहते हैं किन्तु यदि इन भौतिक उपहारों के साथ ही साथ उसकी कृपा रूपी उपहार को अधिक मात्रा में पाने के अभिलाषी बनने के लिए हम नित्य प्रति उस प्रभु से प्रार्थना करें।

दिन में मनोविनोद सुख व प्रसन्नता को पाने के लिए दिन भर अपने मित्र मंडली के साथ और अपने परिवार के साथ मनोविनोद करते रहने से भी हमें प्रसन्नता प्राप्त होती है। जब हम इस प्रसन्नता को पाने के लिए किसी धार्मिक पुस्तक की शरण में जाते हैं, इस का स्वाध्याय करते हैं तो हमारे वह दिन जो अहानि कारक होते हैं, सुखदायक होते हैं, उन को अवसाद के क्षणों से हमारी रक्षा करते हैं। इस प्रकार परिजनों, मित्रों तथा धार्मिक पुस्तकों के साथ मनोविनोद करते रहने वाला प्राणी कभी दु:खी नहीं होता, कभी अवसाद में नहीं जाता अपितु वह सदा सुख पूर्वक रहते हुए न केवल स्वयं ही प्रसन्न रहता है अपितु अपने परिवार को भी सुखी रखने वाला बनाता है। उस के परिजन ही नहीं, उसके मित्र लोग तथा उसके आस पास रहने वाले लोग भी उसके द्वारा बिछाई गई सुखों की चादर पर निश्चिन्त होकर विश्राम करते हैं।

मुक्तक

-महात्मा चैतन्य स्वामी

मसीहों के घरों में ही अब पाप का बसेरा है,
यहां तो बस सब जगह ही दीपक तले अन्धेरा है।
सभी सिंहासनों पर जा बैठा है भ्रष्टाचार-
ईमानदारी का आज भी फुटपाथों पर ही डेरा है।।

हींग लगी न फटकरी फिर भी रंग चोखा हो गया,
आदमी अपने लिए ही आज एक धोखा हो गया।
आज इधर की जय-जयकार, कल उधर लुढ़क गया-
स्वार्थ हेतु यह बिन पेन्दे का लोटा हो गया।।

कभी सौम्य तो कभी शालीन है यह आदमी,
मतलब के लिए बिछा कालीन है यह आदमी।
पशुता भी इससे खौफ़ खाने लगी है अब तो-
इन्सानियत से पूरी तरह हीन है यह आदमी।।

बेइमानी के हेर-फेर पर है आदमी,
खड़ा हुआ बारूदी ढेर पर है आदमी।
निश्चित ही यह अपना सिर फोड़ लेगा-
नशे में धुत् और मुण्डेर पर है आदमी।।

महर्षि का जन्मोत्सव मनाया

युग प्रर्वतक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 194वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य समाज दीनानगर की ओर से भव्य प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। आर्य समाज मन्दिर से प्रारम्भ होकर नगर के मुख्य गलियों, बाजारों से निकाली गई यह प्रभातफेरी महर्षि दयानन्द की जय के उदघोष करती हुई आर्य समाज के महामन्त्री रमेश महाजन के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई। इस प्रभात फेरी में स्वामी सर्वानन्द गुरूकुल के ब्रह्मचारी, दयानन्दमठ के शास्त्रीगण आर्य समाज के प्रधान रघुनाथ सिंह शास्त्री, हर्ष आर्य, राजेश महाजन, नारायण शास्त्री, विजय शास्त्री, यतीन्द्र शास्त्री आनरेरी कप्तान कौशलेन्द्र आर्य, स्वामी आनन्दमुनि एवं बहुत से आर्य जन उपस्थित थे। शास्त्री यतीन्द्र जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मधुर भजन सुना कर आर्य जनता को निहाल किया। **-रमेश महाजन मन्त्री आर्य समाज दीनानगर**

कस्मै देवाय हविषा विधेम

ले.-सुशील वर्मा गली मास्टर मूलचन्द वर्मा फाजिलका (पंजाब)

कुछ वर्ष पहले टैलिविजन पर एक धारावाहिक आया करता था। ''भारत एक खोज'' जिसमें उपरोक्त मन्त्रांश का अर्थ बोला जाता था-''किस देवता की उपासना करें हम हवि देकर।'' तो क्या पहले भाष्यकारों ने इस अर्थ को ही स्वीकार किया था। यदि ऐसा ही था तो इसका तात्पर्य तो यह है कि हमें ज्ञात ही नहीं कि किस देवता की पूजा, उपासना करें हम? ऐसे ही अन्य मन्त्रों के अर्थ हमारे वेदों के प्रति उपहास का विषय रहा। पाश्चात्य विद्वान तो चाहते ही यही थे। इन भाष्यकारों का भाष्य लौकिक संस्कृत पर आधारित रहा अथवा तो उनका भाष्य एक ही विषय पर केन्द्रित रहा। उदाहरण स्वरूप यजुर्वेद का पूरा भाष्य महीधर और उव्वट द्वारा यज्ञ विषयक ही रहा, फिर चाहे उन्हें अश्लील अर्थ ही क्यों न करने पड़े हो। विडम्बना है कि आज भी वही भाष्य मुख्यत: प्रचलित है। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा भाष्य आर्य समाजों तक ही सीमित हैं। स्वामी जी जो वेदज्ञ थे, उच्चकोटि के विद्वान एवं विलक्षण बुद्धि के धनी थे, जिन्होंने बहुत ही मार्मिक, सार्थक एवं सारगर्भित भाष्य प्रस्तुत किए, परन्तु अफसोस कि बहुत से विश्वविद्यालयों, कॉलेज आदि संस्थानों में वही दोष सहित सायण, महीधर, उव्वट के भाष्य ही पढ़ाए जाते हैं।

उपरोक्त मन्त्रांश के भाष्य के परिपेक्ष में स्वामी जी के दर्शित किए अर्थों पर दृष्टिपात करें तो हमें मालूम होगा कि किस देवता की उपासना करें, हम। पहले उन लोगों ने 'क' का अर्थ 'कौन' अथवा 'किसकी' ही किया। स्वामी जी ने प्रमाणित किया कि 'क' क अर्थ ''सुखप्रदाता परमात्मा''। आइए इस मन्त्रांश पर चिन्तन करें। स्वामी जी द्वारा निर्धारित हवन पद्धति में स्तुति प्रार्थना एवं उपासना प्रकरण में दूसरा, तीसरा, चौथा एवं पाँचवां मन्त्र इस मन्त्रांश को दर्शाता है। स्वामी जी द्वारा प्रदत अर्थों पर हम विचार करें। इन चारों मन्त्रों में एक अलग ही व्याख्या है। ऐसी व्याख्या कभी नहीं की गई।

दूसरा मन्त्र-यहाँ इस पद का अर्थ स्वामी जी लिखते हैं ''हम लोग सुख स्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से भक्ति किया करे।'' यहाँ पर उन्होंने हवि का अर्थ घृत, आज्यम् अथवा सर्पि आदि नहीं किया अपितु यह भाव दिखाया कि उपासक हृदय का प्यार ही हवि है। उपासना प्रकरण में इस प्रेम से सुन्दर अर्थ क्या होगा? इसी प्रकार ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास के अतिरिक्त सहारा एवं पतवार क्या होगा? योगाभ्यास उपासक का प्रभु के साथ योग कराता है और यही प्रभु प्राप्ति प्रसंग में सबसे उचित व्याख्या है। इस मन्त्र में उपासक अपना अभिमान दूर करके उस परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करता है क्योंकि पहले मन्त्र में मनुष्य जब भद्र की प्रार्थना करता है तो उसके हृदय में अभिमान जागृत हो जाता है कि मैं किसी से क्यूँ माँगू? परन्तु जब उस परमात्मा का विराट रूप सामने आता है तो उस प्रभु की सत्ता, सभी का स्वामी, अधिष्ठाता, अपने गर्भ में समस्त ब्रह्माण्ड को समाया हुआ प्रतीत करता है तो उसका अभिमान चूर-चूर हो जाता है। वह कह उठता है ''कस्मै देवाय हविषा विधेम'' अर्थात् उस सुख स्वरूप शुद्ध आत्मा के प्रति अपने हृदय प्रेम की आहुति अपनी हवि।

तीसरे मन्त्र में भी यही पद आता है परन्तु यहाँ अलग ढंग से स्वामी जी ने उल्लेख किया ''उस सुख स्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्त:करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।''

मनुष्य जब परमात्मा का विराट रूप देखता है, प्रतीत करता है तो वह अभिमान रहित हो जाता है। उसकी समझ में आता है कि वह तो तुच्छ नरकीट मात्र ही है क्योंकि वह तो ''आत्मदा बलदा'' है। वहीं दाता है, वही देने वाला है, आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला है। उस प्रभु की छाया ही अमृत है अन्यथा मौत ही मौत। उस परमसत्ता के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं, कोई मार्ग नहीं, कोई साधन नहीं।

''तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्य: पन्थाविद्यतेऽयनाय'' उसे समझ आ जाती है कि आत्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए आत्मा को आहुत करना आवश्यक है। आज हम पूजा का अर्थ केवल मात्र यही लेते हैं- धूप बत्ती करना, तिलक लगाना, कुछ भौतिक वस्तुएँ भेंट अर्पित करना, आरती करना, प्रशाद चढ़ाना आदि। क्या यही पूजा है? सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में स्वामी जी पूजा का अर्थ करते हैं-'सत्कार'। ''पूजनं नाम सत्कार:''। पूजा अथवा सत्कार तो जीवित प्राणी का ही किया जा सकता है। उनकी सेवा करना, उनके सुख सुविधा के साधन जुटाना, उनकी आज्ञा का पालन करना। इसलिए जड़ पदार्थों का, मूर्तियों का सत्कार सम्भव नहीं। पौराणिक परम्परा में पंचायतन पूजा अथवा पंच देव पूजा प्रचलित है। जिसमें वे शिव, विष्णु, गणेश, अम्बिका एवं सूर्य की पूजा करते हैं। परन्तु स्वामी जी ने उन्हें जड़ वस्तु माना है। उनके अनुसार पंच देव पूजा का अर्थ है पाँच जीवित देवताओं की पूजा, सत्कार एवं सम्मान। ये पांच देवता क्रमश: माता, पिता, आचार्य अतिथि एवं पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति हैं। ये पांचों देवता ही पूजनीय है, सत्कार करने योग्य है।

इस मन्त्रांश के अर्थ में उन्होंने भक्ति का अर्थ उस परमपिता परमात्मा की आज्ञा पालन के लिए तत्पर रहना किया है। वह आज्ञा पालन केवल मात्र बाह्य नहीं अपितु अन्त:करण से भक्ति करना। उन्होंने कहा ''परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्त:करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।'' यहाँ पर भक्ति से अर्थ ही उस परमपिता की आज्ञा पालना है, अर्थात् वेदानुकूल मार्ग पर चलने का आदेश। दिखावा मात्र नहीं, अपितु मन बुद्धि द्वारा स्वीकार करते हुए हमेशा तत्पर रहना, कटिबद्ध रहना। तभी यह भक्ति स्वीकार्य है, तभी हवि सार्थक होगी। साधारण जीवन में भी देखा जाए तो शरीर, आत्मा एवं समाज के बल के लिए अन्त:करण का बल अति आवश्यक है। क्योंकि शारीरिक बल होने पर भी आत्मिक बल के अभाव में मनुष्य बलवान होते हुए भी भीरु एवं कायर होता है और बलवान भी दुर्बल से पराजित हो जाता है। इसलिए आत्मा और अन्त:करण से भक्ति ही वास्तविक स्तुति है।

इसी प्रकार चतुर्थ मन्त्र में स्वामी जी इसी पद का अर्थ अन्य प्रकार से करते हैं। उनकी विलक्षणता देखिए ''उस सुख स्वरूप सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् अपनी सकल उत्तम सामग्री को उस की आज्ञा पालन में समर्पित करके भक्ति विशेष करें।

इस मन्त्र में मनुष्य को अहसास करवाया गया है कि वह प्रभु सब प्राणि मात्र का स्वामी है। उसे पता है कि यह संसार स्थाई निवास नहीं है इसीलिए अनित्यता पर विचार कर उसकी उपासना करें। वह समस्त ब्रह्माण्ड का स्वामी है, चर अचर जगत का मालिक है उसके लिए ''कस्मै देवाय हविषा विधेम'' का यही अर्थ है कि वह उसकी आज्ञा का पालन करे। केवल पालन ही नहीं अपितु अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके भक्ति विशेष करे। हे उपासक! तू अपनी सकल उत्तम सामग्री को हवि बना ले और उस प्रभु के चरणों में समर्पित कर दे। प्रश्न यह है कि यह उत्तम सामग्री क्या है? आज्ञा पालन का आदेश तो पहले भी दिया जा चुका है परन्तु यहाँ आज्ञा पालन उत्तम सामग्री के साथ कहा गया है। वास्तव में हमारा शरीर ही उत्तम सामग्री है क्योंकि मनुष्य परमात्मा की उच्चतम कृति है। हमारा उत्तम शरीर यौवनावस्था में ही है, वृद्धावस्था में नहीं। हम कहते हैं कि अभी क्या बुढ़ापे में उसकी उपासना कर लेगें। यौवनावस्था में ही हमें उसकी भक्ति अर्थात् उस की आज्ञा पालन के लिए कटिबद्धता से तैयार होना होगा, सुमार्ग एवं सुपथ ही हमें उस की उपासना के लिए प्रेरित करेगा। अपनी मन बुद्धि को उस से प्रीति करने में तत्पर हो जाएँ। हमारा अर्जित धन (यह भी एक साधन है) भी धर्म की उन्नति का साधन बनें। इसी प्रकार हमारा उच्चतम समय प्रात: काल का है जिसे हम प्रभु भक्ति में लगा दें। अपने उत्कृष्ट ज्ञान को भी विद्या प्रचार प्रसार में लगाएँ। विश्वबन्धुत्व की भावना को जाग्रत करें। मनुष्य के कल्याण हेतु कार्यरत हों। यही सब कुछ उत्तम सामग्री का प्रयोग है। ईश्वर प्रणिधान करें, अपना सर्वस्व उस प्रभु के अर्पित कर दें तभी हमारी हवि सार्थक है। यही तात्पर्य है ''हविषा विधेम'' का।

अन्त में पंचम मन्त्र पर चिन्तन करें। स्वामी जी ने यहाँ उल्लेख किया है ''हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करे।'' पहले योगाभ्यास और अति प्रेम से (हृदय प्रेम), फिर आत्मा और अन्त:करण से, तत्पश्चात अपनी सकल उत्तम सामग्री द्वारा और अब सब सामर्थ्य से उसकी आज्ञा पालन में समर्पित

(शेष पृष्ठ 7 पर)

ऋषि जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 11.02.2018 (रविवार) को राष्ट्र पिता महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 194वां जन्म दिवस बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस सुअवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसमें नगर के प्रसिद्ध आर्य परिवार के श्री केवल बहल और श्रीमती उपासना बहल (दम्पति) ने यजमान पद को सुशोभित किया। नगर से पधारे आर्य जनों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डाली।

तत्पश्चात 'दयानंद हाल' में ऋषि जन्मोत्सव का कार्यक्रम आगे बढ़ा। श्रीमती बिमला भाटिया और श्रीमती सरोज धीर ने महर्षि दयानंद के जीवन से कुछ विशेष तथ्यों को गाकर सुनाया और समय बांध दिया। मन्त्री प्रो. यशपाल वालिया ने मुख्य अतिथि प्रि. डा. उमेश चन्द्र जी का परिचय देकर देव दयानंद का जयघोष किया और स्वामी दयानंद जी के जीवन से कुछ घटनाओं को उजागर करते हुए कहा कि ऋषि दयानंद सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के निर्माता थे। अन्तराल में दो बच्चों-कुमार ऐरी (6 वर्ष) और संदीप सागर (10 वर्ष) ने ईश्वर स्तुति प्रार्थना के मन्त्रों को जुबानी सुनाया। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रिं. डा. उमेश चन्द्र ने स्वामी दयानंद जी को नमन करते हुए जन साधारण को विशेषत: युवा वर्ग को महर्षि दयानंद सरस्वती से सीख लेने के लिये उत्साहित किया। उन्होंने आगे कहा कि दण्ड़ी स्वामी विरजानंद जी की तपस्थली में तपे दयानंद ने भारत की स्वतन्त्रता, नारी शिक्षा, वेदों के पढ़ने को सर्वाधिकार और जातीय समानता पर ज़ोर दिया। 'अपना देश, अपनी भाषा, अपना वेष' ही उनके मन की बात थी और वे भारतीय संस्कृति के पक्षदार होते हुए आर्य समाज की स्थापना कर गये ताकि समूचा समाज जर्जर रीति रिवाजों, पाखण्ड, और धार्मिक भ्रष्टाचार से ऊपर उठकर एक स्वतन्त्र जीवन जीने का आनंद मान सके। अंत में उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सभी आर्य समाजों में अतिथियों के रात भर ठहरने की व्यवस्था होनी चाहिये। प्रो. के. सी. शर्मा ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद करते हुए कहा कि सचमुच आर्य समाजों में युवाओं की उपस्थिति बढ़नी चाहिये। शांति पाठ के पश्चात् सभी उपस्थित आर्यजनों न मिलजुल ऋषि प्रसाद का आनंद माना।

-दुगेश नन्दिनी आर्य

यज्ञ सम्पन्न

भारतीय संस्कृति में माघ मास में पवित्र यज्ञ आदि की बड़ी प्राचीन परम्परा है। प्रभु को असीम कृपा से गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी स्त्री आर्य समाज जालन्धर छावनी के तत्वाधान में माघ के पवित्र माह में 14 जनवरी 2018 से गायत्री महायज्ञ का शुभारम्भ आर्य बहनों तथा स्थानीय माताओं के सहयोग से प्रतिदिन सायं 4:00 बजे से 5:30 बजे तक किया गया। सर्वप्रथम पहले दिन श्रीमती कमलेश जी तथा श्रीमती वीरां जी ने यज्ञमान बनकर इस पवित्र यज्ञ का शुभारम्भ किया। तत्पश्चात् श्रीमती प्रेम महाजन, श्रीमती सुदेश महाजन, श्रीमती श्रुति अग्रवाल, श्रीमती प्रोमिला तलवाड़, श्रीमती श्यामावति अग्रवाल, श्रीमती आशा अग्रवाल, श्रीमती मोनिका सोनी, श्रीमती राज गुप्ता, श्रीमती धर्मेन्द्र अग्रवाल, श्रीमती सन्तोष जैन, श्रीमती पूनम गुप्ता, श्रीमती इन्दु शैली, श्रीमती कान्ता अग्रवाल, श्रीमती त्रिप्ता अग्रवाल, श्रीमती सुमन अग्रवाल, श्रीमती जीवन आशा जी यजमान बनें।

इन सबके साथ कुछ आर्य माताएँ तथा बहनें जिनमें प्रमुख श्रीमती कविता, श्रीमती गुणमाला, श्रीमती चंचल, श्रीमती सावित्री, श्रीमती सीमा, श्रीमती सुख वर्षा, रेणुका गुप्ता, श्रीमती अरोड़ा, श्रीमती सुनीता, श्रीमती मधु शुक्ला, श्रीमती सन्तोष शर्मा, अनीता शर्मा, श्रीमती सन्धया कौशल का मां इस महायज्ञ में आगमन एवं विशेष योगदान रहा।

इस महायज्ञ को पूर्णाहति रविवार दिनांक 11 फरवरी 2018 को की गई। इस महायज्ञ में ऊपर लिखित सभी आर्य बहनों के साथ स्थानीय बहनों ने भी तन मन धन से अपना पूरा योगदान दिया। हवन यज्ञ तथा पूर्णाहूति के पश्चात् लंगर एवं प्रसाद वितरण किया गया।

प्रभु से प्रार्थना है कि भविष्य में भी सबके सहयोग से ऐसे पुण्य कार्य में हम सब सक्षम बनें। **-श्रीमती प्रोमिला तलवाड़**

धूरी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिन व ऋषि बोधोत्सव का पावन पर्व मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर धूरी, महर्षि दयानन्द सरस्वती नवजागरण के प्रवर्तक के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाशा प्रतिज्ञापाल जी अध्यक्षता में एवं आर्य समाज के प्रधान वीरेन्द्र कुमार गर्ग की अगुवाई में बड़े धूम-धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर सबसे पहले आर्य समाज के पुरोहित शैलेश कुमार शास्त्री ने विशेष यज्ञ करवाया जिसमें यज्ञ के मुख्य यज्ञमान यज्ञ मंत्री रमेश आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी कृष्णा आर्या, प्रधान वीरेन्द्र कुमार गर्ग, महामंत्री प्रहलाद कुमार आर्य, तथा आर्य कालेज के सभी अध्यापिकाओं ने यज्ञ में आहुतिया डाली तथा समाज के सभी अधिकारीगण इस यज्ञ में उपस्थित महानुभावों ने आहूति डाल कर ज्ञान प्राप्ति की प्रार्थना की। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के चारों शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित भजन-भाषण व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के महामंत्री प्रहलाद कुमार आर्य ने बहुत ही अच्छे ढंग से किया। प्रधान जी ने उद्बोधन करते हुए कहा कि आर्य श्रेष्ठ पुरुष को कहते है, शिव कल्याण चाहने वाले को कहते है। इस ऋषि बोधोत्सव के पावन पर आर्य सी. सै. स्कूल, आर्य कालेज, यश चौधरी माडल स्कूल, व महाशा चेतराम टैक्निकल इन्स्टीच्यूट के सभी छात्र-छात्राए, अध्यापक-अध्यापिकाओं ने बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ कार्यक्रम में भाग लिया तथा आर्य समाज मन्दिर के सभी अधिकारी व सदस्य भी उपस्थित रहे। आर्य समाज के कोषाध्यक्ष पवन कुमार गर्ग, माडल स्कूल के मैनेजर सतीश पाल, आर्य कालेज के प्रधान वसुदेव आर्य, संरक्षक आर पी. शर्मा, कार्यकारी प्रधान सोम प्रकाश आर्य, अशोक गुप्ता, डा. सुरजीत सरीन, विजय आर्य, अशोक जिन्दल, विवेक जिन्दल, विकास शर्मा, श्रीमति आरती तलवाड़ तथा स्त्री आर्य समाज की श्रीमति कुसुम गर्ग, शिमला देवी, शशी सरीन, उर्मिला आर्य, दर्शना देवी, मधुरानी, प्रि. बी एल कालिया, मोनिका वाटस, ऋचा गर्ग, निशा मित्तल व सभी अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित हुए।

प्रहलाद कुमार आर्य, महामंत्री आर्य समाज मन्दिर धूरी

ऋषि दयानन्द जी का जन्म दिवस मनाया

आर्य समाज, जी.टी. रोड़, फिरोजपुर छावनी में ऋषि दयानन्द जन्म दिवस एवं ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। सर्वप्रथम पंडित मनमोहन शास्त्री जी ने बड़ा ही विधिवत् इन दोनों पर्वों की विशेष आहूतियां डलवा कर यज्ञ करवाया। जिसमें श्रीमती रेनु चावला एवं श्री अजय चावला, एडवोकेट मुख्य यज्ञमान बने।

इस यज्ञ के उपरान्त, आर्य जगत् में सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक व इस समाज में ओजस्वी प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने पहली बार फिल्मी धुनों के तरीकों पर ऋषि दयानन्द जी की जीवनी पर अपनी मधुर वाणी में भजन रखे जो सभी को बहुत ही पसन्द आएँ और सभी मन्त्रमुग्ध हो गए।

फिर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महा उपदेशक आचार्य नारायण सिंह जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने बड़े ही रोचक और साधारण सरल शब्दों में ऋषि दयानन्द जी को जीवन आस्था रखो इसमें विशेष बात यह थी कि उनके प्रवचन को छोटे बच्चे भी बड़े ध्यान से सुन रहे थे। सभी ने संकल्प लिया कि ऋषि दयानन्द जी द्वारा दर्शाऐ मार्ग पर हम अपना जीवन बिताऐंगे और आर्य समाज को तन-मन और धन से सेवा करेंगे ताकि ऋषि का सपना पूरा हो सके।

अंत में प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया विशेषकर आर्य प्रतिनिधि पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी का और महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी का जिन्होंने इस पर्व पर महापदेशक श्री नारायण सिंह जी को भेजने की व्यवस्था करी। जलपान के उपरान्त उत्सव सम्पन्न हुआ। **-मनोज आर्य**

पृष्ठ 2 का शेष-जल प्रदूषण और...

प्रभाव पड़ा रहा है।

जल प्रदूषण की रोकथाम के उपाय-

1. नगरों, महानगरों तथा छोटे कस्बे में जल उपचार संयंत्रों की स्थापना की जाए।

2. कस्बों, नगरों, महानगरों में सुलभ शौचालय की व्यवस्था हो।

3. विद्युत शवदाह की स्थापना की जाए जिससे कि अधजले शव तथा कार्बनिक पदार्थ नदियों में प्रवाहित न हो सके।

4. सरकार अथवा जनसेवी संस्थाओं द्वारा जन चेतना अभियान प्रारम्भ किया जाए।

5. मृतक पशुओं के नदियों में विसर्जन पर पूर्ण रोक लगाई जाए।

6. उद्योगों के दूषित जल को साफ करके उसको सिंचाई में काम लें।

7. औद्योगिक अपशेषों का उपयोग खाद बनाने में करें।

फगवाड़ा में वेद प्रचार दिवस मनाया गया

फगवाड़ा : ''दूसरों के गुण और अपनी हमेशा गलतियां देखा करो, ज़िन्दगी की हूबहू झलकियां देखा करो।'' ''किसी के काम जो आए उसे इन्सान कहते हैं, पराया दर्द अपनाए उसे इन्सान कहते हैं।'' यह विचार आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा द्वारा स्व. मा. मनोहर लाल चोपड़ा की स्मृति में आयोजित वेद प्रचार दिवस में डा. स्वामी पूर्णानंद सरस्वती जी ने ''वेदों में यज्ञ की महिमा एवं जीवन दर्शन'' विषय पर आधारित अपने भजनोपदेश में व्यक्त किए।

नगर विधायक सोम प्रकाश ने कहा कि लोग उन्हीं को याद करते हैं जो अपनी ज़िन्दगी में दूसरो के काम आया करते हैं। इस मौके पर डा. योगेन्द्र पाल शर्मा और प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ने भी विचार व्यक्त किए। सभा की शुरुआत हवन यज्ञ से की गई जिसके मुख्य यजमान थे- श्रीमती सरला चोपड़ा, श्रीमती एवं श्री रणजीत सोंधी, श्रीमती नीलम चोपड़ा, श्रीमती एवं श्री आशीष पुरी, श्रीमती एवं श्री रोहित प्रभाकर। दसवीं कक्षा में 80 प्रतिशत और इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले आर्य माडल सी. सै. स्कूल के विद्यार्थियों को विधायक सोम प्रकाश ने सम्मानित किया। श्रद्धेय विद्वान सन्यासी, स्वामी पूर्णानंद जी को भी विधायक सोम प्रकाश ने गर्म दोशाला ओढ़ाकर धनराशि से सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में सर्व श्री सुरिन्द्र चोपड़ा, धर्मवीर नारंग, नीलम पसरीचा, बलराज खोसला, सुशील कोहली, सुशील वर्मा, शीतल कोहली, सुमनदीप स्थाल, कीमती शर्मा, बलदेव शर्मा, रमन नारंग, बल्लू वालिया, मदन मोहन खट्टर, सतीश बग्गा, अशोक खुराना, नरिन्द्र बरमानी, विजय कुमार मधुभूषण कालिया, महिन्द्र थापर, तिलक राज कलूचा, तिलक राज, सवित्री सरदाना, राजेश पातरा, शिव हांडा, रमेश सचदेवा, मेयर अरुण खोसला, वरुण चोपड़ा, रमेश वर्मा, कामिनी चोपडा, प्रिं. के. एल. सोबती, रेणु चोपड़ा व डा. यश चोपड़ा सहित लगभग 250 लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि प्रसाद एवं वैदिक साहित्य भी वितरित किया गया। **डा. यश चोपड़ा महासचिव**

पृष्ठ 5 का शेष-कस्मै देवाय हविषा...

कर भक्ति विशेष का निर्देश। कारण यही है कि वह महासामर्थ्यवान, सबका रक्षक, सुख प्रदाता है, हम उस की उपेक्षा कर ही नहीं सकते क्योंकि वह ही समस्त ब्रह्माण्ड को धारण करने वाला है, सूर्यादि जो तीक्ष्ण स्वभाव के हैं, पृथ्वी जैसे दृढ़ पदार्थों को धारण करता है। वही सब का विधाता है। यही विचार करके स्वत: कह उठता है ''कस्मै देवाय हविषा विधेम।'' निर्णय कर लेता है वह उपासक कि सब विकल्प त्याग कर अपने पूर्ण सामर्थ्य से हवि अर्पित करूँगा। हे मानव! यदि तू पूर्ण रुपेण अपने आप को समर्पित कर देगा तो फिर देर नहीं कि वह तेरा सहायक न हो क्योंकि वेद का आदेश है ''न ऋतेश्रान्तस्य सख्याय देवा।'' यहाँ सारांश यही है कि सब सामर्थ्य से भक्ति करें और भक्ति का अर्थ है उस परमपिता परमात्मा की आज्ञा पालन करना। आज्ञा पालन भी दिखावे के लिए नहीं, आत्मा और अन्त:करण से। बाहरी तौर पर तो हम यज्ञ भी करते है, दान भी करते हैं, सेवा का आवरण लेकर सेवा भी कर रहे हैं। बस सब ऊपर ऊपर से। ये भावनाएँ अन्दर से जागृत हों इसीलिए कहा जाता है ''उद्बुद्धये स्वाग्ने'', अपनी अन्तर आत्मा को जागृत करें, अपने अन्त:करण को जागृत करें, जो भी कार्य करें, परमात्मा की आज्ञानुसार, आत्मा के द्वारा, आत्मनिष्ठ होकर। यही भक्ति है, यही हवि अर्पित करना है और यही है उस सुखस्वरूप, शुद्ध परमात्मा के प्रति समर्पण, यही है ''कस्मै देवाय हविषा विधेम'' का वास्तविक अर्थ। धन्य है वह ऋषि देव दयानन्द, जिसने हमें यह मार्ग बताया, नमन है उस महान विभूति को, नमन है उस महान वेदज्ञ को।

आर्य समाज मंदिर, पटियाला में 'ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव'

''हम दयानन्द जी के बहुत ऋणी हैं; जिन्होंने विश्व कल्याण के लिए वेदों का पुन: उत्थान किया। उन्होंने तत्कालीन समाज में फैली हुई 'बाल-विवाह', 'अशिक्षा', 'पाखंड' व 'अंधविश्वास' आदि कुरीतियों को दूर करके एक स्वच्छ समाज की स्थापना में अपना पूरा जीवन लगा दिया।'' यह कहना था प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर का जो मुख्य प्रवक्ता के रूप में 'आर्य समाज मंदिर' आर्य समाज चौक, पटियाला एवं डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड, पटियाला के सयुंक्त तत्त्वावधान में महान समाज सुधारक, शिक्षाविद् व क्रांतिकारी आर्य समाज के संस्थापक 'महर्षि दयानंद सरस्वती जी' के प्रति श्रद्धा व भक्ति भाव रखते हुए 'ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव' के अवसर पर अपना शुभ आशीर्वाद देते हुए बोल रहे थे।

इस समारोह का शुभारम्भ वैदिक हवन यज्ञ के साथ किया गया जिसमें आर्यजनों ने यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान कर परमपिता परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वामी ब्रह्मावेश जी (छींटा वाला, नाभा) ने इस समारोह की अध्यक्षता की तथा अपना शुभ आशीर्वाद देते हुए कहा, 'महर्षि दयानंद सरस्वती जी' के अनुसार अपना जीवन वेद मार्ग पर चलाना चाहिए जिन्होंने समाज कल्याण के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया।

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री बसंत कुमार शोरी जी (बरनाला) ने अपने संबोधन में कहा कि हमें महर्षि देव दयानंद जी के जीवन से उत्तम गुण और विचार ग्रहण करके राष्ट्र उत्थान में अपना योगदान देना चाहिए। प्रार्थना और पुरुषार्थ के समन्वय से ही ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

मंच संचालन करते हुए श्री बिजेंदर शास्त्री, सुरेंदर शास्त्री, डॉ. ओम देव आर्य एवं प्राचार्य निखिल मंडल जी ने भी महर्षि जी के त्यागमयी जीवन पर प्रकाश डाला।

श्रीमती रजनीत कौर (संगीत अध्यापिका, डी. ए. वी. स्कूल) द्वारा स्कूली बच्चों तथा आर्य कन्या स्कूल के बच्चों के साथ मिलकर भक्तिपूर्ण प्रस्तुति 'सूरज बनकर था किया पापों का दूर अँधेरा' और 'ना कोई साथी, सखा, सहेला.....।' भजनों से महर्षि जी का गुणगान किया। सभी ने मिलकर 'वैदिक धर्म की जय' महर्षि 'देव दयानन्द जी की जय' 'प्रज्ञा चक्षु गुरु विरजानंद जी की जय', 'स्वामी श्रद्धानन्द जी की जय', 'आर्य समाज अमर रहे' 'वेद की ज्योति जलती रहे' व 'ओ३म् का झंडा ऊँचा रहे' के जयघोष लगाए। आर्य समाज के पदाधिकारियों ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। प्रधान श्री राजकुमार सिंगला जी ने सबका धन्यवाद किया और विशेष रूप से प्राचार्य एस आर प्रभाकर का धन्यवाद करते हुए कहा कि जब से उन्होंने पटियाला में पद ग्रहण किया है। आर्य समाज के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं।

इस अवसर पर प्रिं. श्रीमती संतोष गोयल (आर्य कन्या स्कूल), वीरेंदर सिंगला, वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, रमेश गंडोत्रा, के. के. मोदगिल, गुलाब सिंह, प्रवीण कुमार आर्य, डी. ए. वी. स्कूल एवम् आर्य कन्या स्कूल के शिक्षकवृन्द तथा नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

परमेश्वर के आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद वितरण और 'शान्ति-पाठ' के साथ महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव पर्व पर पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान करते हुये आर्य समाज के संरक्षक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदेश कुमार जी, प्रधान श्री राज कुमार जी एवं संरक्षक श्री कमल किशोर जी। चित्र दो में शोभा यात्रा के अवसर पर लिया गया चित्र।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव का पर्व बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम 5 फरवरी से 11 फरवरी तक चलता रहा। 1 फरवरी से 4 फरवरी तक प्रात: वेद मन्दिर की ओर से प्रभात फेरियां निकाली गई। 5 फरवरी से स्वामी माधवानन्द जी हिसार से तथा श्री सुरेन्द्र जी जालन्धर से वेद कथा तथा भजनों के माध्यम से लोगों का मार्गदर्शन करते रहे। यह कार्यक्रम रात्रि को 7:30 से 10:00 बजे तक चलता रहा। लंगर का प्रबन्ध प्रतिदिन किया गया।

दिनांक 11 फरवरी को सुबह विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री जी थे। यज्ञ के पश्चात ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य सम्मेलन का आयोजन स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में किया गया। यह कार्यक्रम 2 बजे तक चला जिसमें स्वामी माधवानन्द, विजय शास्त्री, स्वामी सदानन्द, श्री सुधीर शर्मा, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न ने अपने-अपने विचार रखें। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से विधायक श्री सुशील रिंकु जी तथा पार्षद श्री तरसेम सिंह जी पधारे तथा सभी को आज के दिन की शुभकामनाएं दी। वेद मन्दिर की ओर से दोनों का विशेष रूप से सम्मान किया गया। उन्होंने शोभायात्रा का अगुवाई की। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से श्रीमती वीरां देवी, श्री अमी चन्द पूर्व प्रधान, को भी सम्मानित किया गया। इन्होंने आर्य समाज की बहुत सेवा की है। सारा प्रोग्राम बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ। सारे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए मन्त्री बिशम्बर कुमार, प्रधान राज कुमार, कोषाध्यक्ष पं. मनोहर लाल, संरक्षक श्री कमल किशोर, मन्त्री लाभ चन्द, मन्त्री जगदीश भगत, उपप्रधान रमेश लाल, सदस्य राकेश, मोनू, पीलू, शशि, वेद प्रकाश, श्रीमती कान्ता, श्रीमती, शीला, श्रीमती सत्या का तथा सभी आर्य समाजों का विशेष योगदान रहा।

सुदेश कुमार
वरिष्ठ उपप्रधान वेद मन्दिर

आर्य समाज मंदिर मेन बाजार पठानकोट का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर मेन बाजार पठानकोट में साप्ताहिक सत्संग में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन एवं उपस्थित जन समूह।

आर्य समाज मंदिर मेन बाजार पठानकोट में दिनांक 13 फरवरी 2018 रविवार को प्रात: 8.00 बजे साप्ताहिक हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें आर्य समाज मंदिर मेन बाजार पठानकोट के सभी सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हवन यज्ञ के पश्चात आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट के वार्षिक चुनाव की प्रक्रिया शुरू हुई। जिसमें श्री वीरेन्द्र महाजन को सर्वसम्मति से आर्य समाज मंदिर का प्रधान निर्वाचित किया गया और कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सदस्य बनाने का उन्हें पूर्ण अधिकार दिया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य श्री गनपत राय, प्रो. स्वतंत्र कुमार, श्रीमती सविता कालड़ा, विमला डोगर, विनोद मल्होत्रा, श्री जौली, श्री संतोष महाजन, श्री केवल गुप्ता उप एवं आर्य जन उपस्थित थे। प्रो. स्वतंत्र कुमार उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने श्री वीरेन्द्र महाजन को आर्य समाज मंदिर मेन बाजार पठानकोट का सर्वसम्मति से प्रधान चुने जाने पर आभार प्रकट किया और कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट को पूर्व की तरह अपना पूर्ण सहयोग देती रहेगी। उन्होंने बताया कि आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट पंजाब की सबसे प्राचीन और अग्रणी आर्य समाज है और वेद प्रचार के कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती है।

संजीव कुमार तुली मंत्री

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।